एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने में मत्स्य क्षेत्र का योगदान

(संदीप मिश्रा[1], चंद्र भूषण कुमार[2], गौरव राठौर[2] एवं *देवर्षि रंजन[3])
[1]आचार्य नरेंद्र देव कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत- 224229
[2]नेशनल ब्यूरो ऑफ फिश जेनेटिक रिसोर्सेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत- 226002
[3]मत्स्य कॉलेज, ढोली, डॉ. रा. प्र. केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर, बिहार, भारत – 848125
*संवादी लेखक का ईमेल पता: devarshiranjan508@gmail.com

भारत में मत्स्य क्षेत्र का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। मत्स्य पालन एक ऐसा प्रगतिशील क्षेत्र है जो लोगों को पोषण एवं खाद्य सुरक्षा के साथ-साथ स्वरोजगार एवं व्यापार तथा आर्थिक सहायता प्रदान करता है। वर्तमान में वैश्विक उत्पादन में 7.58% की भागीदारी के साथ भारतीय मत्स्य क्षेत्र देश की GDP में 1.24% एवं कृषि GDP में 7.28% का योगदान देता है। भारत में लगभग 28 मिलियन लोग अपनी आजीविका और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता के लिए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से इस क्षेत्र से जुडे हुए हैं। मत्स्य क्षेत्र का विकास बहुत से रूपों जैसे कल्चर-कैप्चर फिशरी, मत्स्य प्रसंस्करण, मत्स्य बीज उत्पादन, मत्स्य आहार उत्पादन, मत्स्य उत्पाद मूल्य संवर्धन एवं उसकी डिब्बा-बंदी इत्यादि में रोजगार प्रदान करने की अनवरत संभावना रखता है।

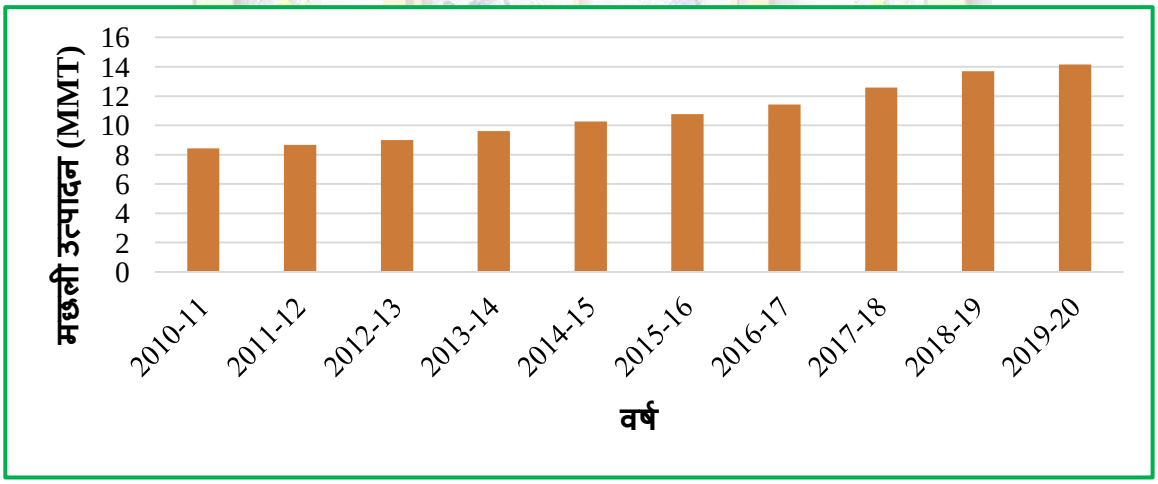

चित्र 1. भारत का वर्षवार कुल मत्स्य उत्पादन

अन्तर्स्थलीय और समुद्री मत्स्यिकी

भारत में मत्स्य उत्पादन के लिए मानव निर्मित जलस्रोतों के साथ-साथ प्राकृतिक जलस्रोत भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं जिसमें से नदियाँ एवं नहरें (1.95 लाख किलोमीटर), झीलें (7.98 लाख हेक्टेयर), जलाशय (31.50 लाख हेक्टेयर) तथा खारे मत्स्यजल स्रोत के रूप में 2.02 मिलियन स्क्वायर किलोमीटर EEZ के साथ 8118 किलोमीटर समुद्री तट उपलब्ध है, जोकि भारतीय मत्स्य क्षेत्र के विकास

की अपार संभावनाएँ दर्शाता है। हमारे देश में समुद्र एवं नदियों से कई प्रकार के जालों (गियर) एवं नौकायन (क्राफ्ट) की मदद से मछली पकड़ने की कला प्रचलित हैं परंतु जैसे-जैसे तकनीकी का विकास होता गया अन्य क्षेत्रों की तरह मत्स्य क्षेत्र में भी क्रांतिकारी तकनीकी बदलाव आये हैं जिसकी वजह से नदियों एवं समुद्र में मछली पकड़ना अब बहुत ही आसान हो गया है। जैसे की पहले समुद्री क्षेत्र में केवल उथले या बहुत कम दूरी तक ही मछली पकड़ पाते थे जिससे की उथले समुद्री क्षेत्र में मछलियों की संख्या लगातार कम हो रही थी और मछलियाँ पूर्ण रूप से प्रजनन भी नही कर पा रही थी परंतु अब तकनीकि की मदद से हम समुद्री क्षेत्र में पहले से ही यह पता लगा लेते हैं कि किस क्षेत्र में कितनी मछलियाँ हैं और कहाँ पकड़ी जा सकती हैं अतः यह कहना बिल्कुल भी गलत नहीं है कि मत्स्य क्षेत्र रोजगार सृजन एवं देश को आत्मनिर्भर बनाने में पूरी तरह सक्षम है। समय-समय पर भारतीय मत्स्य विभाग के विभिन्न मत्स्य विकास एवं अनुसंधान संस्थानों (CIFRI, CMFRI, CIBA, CIFT, DCFR) द्वारा मत्स्य किसान एवं मछुआरों को निःशुल्क प्रशिक्षण भी दिया जाता है। जिससे कि इस क्षेत्र से जुड़े हुए लोगों का कौशल विकास तथा उन्हें नई तकनीकियों से जोड़ा जा सके।

चित्र 2. अन्तर्स्थलीय और समुद्री मत्स्यिकी

एक्वाकल्चर

भारत में आर्थिक रुप से महत्वपूर्ण जलीय जीवों का उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जाता है। जिसका प्रमाण यह है कि भारत विश्व में एक्वाकल्चर में दूसरे पायदन पर है। एक्वाकल्चर एक ऐसा क्षेत्र है जो कि राजस्व एवं रोजगार सृजन का महत्वपूर्ण साधन है भारत में एक्वाकल्चर पिछले दशकों से 6-7 % की निरन्तर बृद्धि के साथ देश की अर्थव्यवस्था लोगों की आजीविका एवं रोजगार का साधन बना हुआ है। मत्स्य पालन के विकास एवं इससे जुडें हुए लोगों के जीवन स्तर को सुदृढ़ बनाने के लिए भारत सरकार ने 3000 करोड़ परिव्यय के साथ 5 वर्षों के लिए नीली क्रांति (2015-16 से 2019-20) तथा मत्स्य क्षेत्र में बुनियादी ढाँचे के निर्माण एवं विकास के लिए 7522.48 करोड़ की फिशरीज इन्फ्रास्ट्रचर डेवलपमेन्ट फंड (2018-19 से 2022-23) का शुभारम्भ किया जिसका प्रमुख लक्ष्य 8-9% औसत वार्षिक बृद्धि के साथ भारतीय मत्स्य उत्पादन को 2022-23 तक लगभग 20 मिलियन टन तक पहुचाना है। जिसमें से अब तक हमनें 14.16 मिलियन टन उत्पादन प्राप्त किया है। तथा भारत सरकार ने कोरोना वैश्विक महामारी के दौरान मई 2020 में आत्मनिर्भर पैकेज के साथ मत्स्य क्षेत्र में क्रान्तिकारी विकास एवं 9% औसत वार्षिक बृद्धि के साथ मत्स्य उत्पादन को लगभग 22 मिलियन मीट्रिक टन प्राप्त करने के लिए 20050 करोड़ के परिव्यय के साथ 5 वर्षों के लिए महत्वाकाँक्षी प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना का शुभारम्भ किया। एक्वाकल्चर भारत के लगभग सभी प्रदेशों में आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण जलीय जीव उत्पादन की एक प्रचलित कला है जिसके अंतर्गत लोग फिनफिश, झींगा, क्रैब, मजल, ओईस्टर, जलीय पौधे तथा सीबीड का उत्पादन बड़े पैमाने पर करते हैं। भारत में तालाब एवं टैंक (24.33 लाख हेक्टेयर) झींलें (7.98 लाख हेक्टेयर) जलाशय (31.50 लाख हेक्टेयर) एवं खारे जल के स्रोत (14.10 लाख हेक्टेयर) हैं, जो कि मत्स्य व्यवसाय एवं रोजगार सृजन का स्थायी स्रोत हैं परन्तु हमारे देश में कई जल स्रोत मत्स्य पालन का अच्छा साधन होते हुए भी उनका अभी तक अच्छे से उपयोग नही हो पाया है या फिर वे पूर्णतयः अनुपयुक्त हैं। हम इन स्रोतों का उपयोग करके अपने आप को आत्मनिर्भर बना सकते हैं। मत्स्य किसानों को आत्मनिर्भर बनाने तथा उनके कौशल विकास एवं उन्हें नई तकनीकियों से जोड़ने के लिए भारतीय मत्स्य विभाग के विभिन्न

मत्स्य विकास एवं अनुसंधान संस्थानों (NBFGR,CIFE,CIBA,DCFR) द्वारा निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है।

चित्र 3. एक्वाकल्चर

अलंकारिक (सजावटी) मत्स्य व्यवसाय

अलंकारिक (सजावटी) मत्स्य व्यवसाय वैश्विक स्तर पर बहुप्रचलित व्यवसायों में से एक है जो कि भारत में भी बड़े पैमाने पर किया जाता है। अलंकारिक (सजावटी) मत्स्य व्यवसाय एक ऐसा व्यवसाय है जो कि बहुत ही कम जगह और कम पैसे से प्रारम्भ करके विदेशी आयात एवं निर्यात तक ले जाया जा सकता है। सजावटी मत्स्य पालन वैश्विक स्तर पर लगभग 100 मिलियन रूचियों में से दूसरे स्थान पर होने के साथ-साथ 125 देशों की महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है। वर्तमान में सजावटी मछलियों के वैश्विक निर्यात में 0.4 प्रतिशत भागीदारी के साथ भारत का 31वाँ स्थान है। तथा भारत में इसका बाजार लगभग 30 बिलियन अमेरिकी डॉलर का है जो कि घरेलू बाजार से लेकर विदेशी आयात एवं निर्यात तक फैला हुआ है सजावटी मछलियों के पालन एवं उनके बीज उत्पादन तथा इससे जुड़ी हुई समस्त गतिविधियों का प्रशिक्षण समय-समय पर भारत सरकार के केन्द्रीय मीठा जलजीव पालन अनुसंधान संस्थान भुवनेश्वर में निःशुल्क दिया जाता है। सजावटी मत्स्य पालन हमें एक्वारियम निर्माण, मत्स्य आहार, मत्स्य बीज उत्पादन, अलंकारिक जलीय पौधे एवं उपयोगी वस्तुओं के निर्माण एवं उसके व्यापार के क्षेत्र में उद्यमिता के अवसर प्रदान करता है।

चित्र 4. अलंकारिक (सजावटी) मत्स्य व्यवसाय

मत्स्य बीज उत्पादन

भारत चीन के बाद मत्स्य उत्पादन में दूसरे स्थान पर है इसका प्रमुख कारण प्रेरक प्रजनन तथा गुणवत्ता युक्त मत्स्य बीज किसानों को उपलब्ध होना है भारत में 2020 में लगभग 1500 हैचरी से 32 बिलियन कार्प फ्राई का उत्पादन हुआ है। मत्स्य पालन में विविधता एवं उसके विकास को देखते हुए यह कहना बिल्कुल भी गलत नही होगा कि मत्स्य बीज उत्पादन समस्त मत्स्य व्यवसाय का आधार है एवं बढ़ते हुए जलीय जीवों का उत्पादन इस बात का द्योतक है कि मत्स्य बीज उत्पादन हमारे लिये उद्यमिता के नये रास्ते खोल रहा है जोकि अनवरत चलते रहने वाले उद्यमों में से एक है इस क्षेत्र में नयें उद्यमियों के लिए केन्द्र सरकार की फिशरीज इन्फ्रास्ट्रचर डेवलपमेन्ट फंड एवं प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना मत्स्य बीज

उत्पादन में आवश्यक बुनियादी ढाँचे के विकास एवं नई मत्स्य हैचरी की स्थापना के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करती है।

चित्र 5. मत्स्य बीज उत्पादन

मत्स्य प्रसंसकरण

भारत में अन्तर्स्थलीय एवं समुद्री मत्स्य क्षेत्र से पर्याप्त मात्रा में मत्स्य उत्पादन होता है यह उत्पादन न केवल सीधे उपयोग के लिये पर्याप्त है अपितु हम इस उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा दूसरे देशों को भी निर्यात करते हैं जोकि हमारे देश को विदेशी मुद्रा प्राप्त करने में मदद करता है जल्दी खराब होने की प्रकृति के कारण जलस्रोतों से प्राप्त मछली को विपणन (विक्रय) हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने तथा ज्यादा समय तक सुरक्षित रखने के लिए उसके प्रसंस्करण की आवश्यकता होती है। कई मत्स्य औद्योगिक इकाईयाँ प्रसंस्कृत मछली को कोल्डचेन के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान तक तथा अन्य देशों में निर्यात करती हैं। अतः मत्स्य प्रसंस्करण उद्यमिता के साथ-साथ युवाओं के लिए बड़ी मात्रा में रोजगार का सृजन करता है। भारत में मुख्यतः फ्रोजेन झींगा, फ्रोजेनड्राइड सीफूड का निर्यात किया जाता है जो भारत के कृषि निर्यात का लगभग 20% और देश के पूर्ण निर्यात का 10% है भारत में लगभग 50 से ज्यादा मत्स्य उत्पादों का निर्यात लगभग 75 देशो में किया जाता है। दिन प्रतिदिन मत्स्य प्रसंस्करण में बढ़ती हुई तकनीकि एवं विकास हमारे लिए रोजगार एवं उद्यमिता के नये अवसर प्रदान करता है।

चित्र 6. मत्स्य प्रसंसकरण

मत्स्य मूल्य संवर्धन एवं प्रतिरूपता

भारत में मत्स्य उत्पादन एवं मत्स्य उत्पादों की लोकप्रियता को देखते हुए हम यह कह सकते हैं कि मत्स्य मूल्य संवर्धन एवं प्रतिरूपता युवाओं के लिए स्वरोजगार सृजन एवं उद्यमिता का एक प्रमुख साधन है। भारत सरकार की महत्वाकाँक्षी (आत्मनिर्भर भारत) प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना मत्स्य मूल्य संवर्धन एवं उसके बाजार प्रोत्साहन के लिए नोडल एम्पलीमेन्टिंग एजेन्सी NFDB तथा राज्य सरकारों के साथ मिलकर कार्य कर रही है एवं उनकी वेन्डिंग के लिए भारत सरकार द्वारा न्यूट्रीवैन, थ्रीव्हील ई-रिक्शा एवं अन्य साधन अनुदान में दिए जाते हैं। हम मत्स्य मूल्य संवर्धन एवं प्रतिरूपता को एक अवसर के रूप में लेकर अपनी उद्यमिता का साधन बना सकते हैं भारत में मुख्यतः मत्स्य मूल्य संवर्धन के माध्यम से कम

लागत के साथ अच्छे एवं लोकप्रिय उत्पाद बनाकर अपने घरेलू बाजार से लेकर विदेशी निर्यात भी कर सकते हैं। मछलियों से मुख्यतः फिशकटलेट, फिशबॉल, फिश पिकल, फिश फिंगर, फिश सुरिमी इत्यादि बनाकर उद्यम का प्रारम्भ कर सकते हैं।

चित्र 7. मत्स्य मूल्य संवर्धन एवं प्रतिरूपता

मत्स्य आहार

मत्स्य उत्पादन में विविधता एवं बढते हुए घनत्व के कारण मत्स्य आहार की माँग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। मत्स्य आहार उत्पादन एवं विपणन अभी भी एक प्रगतिशील उद्यम है जोकि मत्स्य उत्पादन में विकास के साथ-साथ दिन-प्रतिदिन प्रगति कर रहा है मत्स्य उत्पादन के क्षेत्र में बढ़ते हुए घनत्व के साथ अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए हमें अच्छी गुणवत्ता एवं पोषक तत्वों से भरपूर मत्स्य आहार की आवश्यकता है, अतः मत्स्य आहार की दिन प्रतिदिन बढ़ती माँग के आधार पर मत्स्य आहार उत्पादन एवं विपणन उद्यमिता के साथ-साथ स्वरोजगार के अवसर प्रदान कर हमें आत्मनिर्भर बनाता है। भारत सरकार की फिशरीज इन्फ्रास्ट्रचर डेवलपमेन्ट फंड के द्वारा किसानों को मिनी, स्माल, और लार्ज मत्स्य आहार उत्पादन इकाई अनुदान में प्रदान की जाती हैं जिससे नये उद्यमी छोटे मत्स्य किसान सोयाबीन खली, राइस पॉलिस, सरसों की खली एवं अन्य प्रोटीन के स्रोतों का उचित अनुपात में मछलियों की उपयोगिता के आधार पर विभिन्न आकार के दानों के रूप में आहार बनाकर उनका उपयोग तथा विपणन कर सकते हैं।

चित्र 8. मत्स्य आहार

मत्स्य स्वास्थ्य प्रबन्धन

मत्स्य क्षेत्र के विकास एवं लम्बे समय तक इसी अनुपात में मत्स्य उत्पादन की बृध्दि-दर बनाये रखने के लिए मत्स्य स्वास्थ्य प्रबन्धन संपूर्ण मत्स्य विकास का एक अभिन्न अंग है। मत्स्य उत्पादन में दिन-प्रतिदिन बढ़ते हुए घनत्व के कारण मछलियों में कई प्रकार की नई-नई बीमारियाँ भी आ रही हैं जो कि भविष्य में सम्पूर्ण मत्स्य उत्पादन के लिए एक बड़ा संकट है, जिससे निपटने के लिए हमें वैश्विक स्तर पर एक मजबूत ढाँचे का निर्माण करना होगा जो कि मछलियों के स्वास्थ्य प्रबन्धन एवं वर्तमान में हो रही बीमारियों तथा इसकी वजह से भविष्य में आने वाली कठिनाईयों से निपटने के लिए अन्य क्षेत्रों की तरह मत्स्य स्वास्थ्य प्रबन्धन को भी नई तकनीकी से जोड़ेगा। इसके लिए हमें मत्स्य स्वास्थ्य परीक्षण प्रयोगशालाएँ, मत्स्य औषधि केन्द्र, मत्स्य स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना तथा मत्स्य किसानों को इससे निपटने के लिए उनके प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था के साथ-साथ मत्स्य किसानों को उनकी मछलियों में होने वाले

रोगों एवं उनके निदान के लिए परामर्श की आवश्यकता होगी जो कि युवाओं को मत्स्य स्वास्थ्य परीक्षण एवं निदान, जल, मृदा एवं भोजन की गुणवत्ता की जाँच, मत्स्य स्वास्थ्य एव आहार हेतु परामर्श के साथ-साथ औषधियों, प्रोबायोटिक्स के निर्माण एवं विपणन के क्षेत्र में उद्यमिता के अवसर प्रदान करेगा।

चित्र 9. मत्स्य स्वास्थ्य प्रबन्धन

निष्कर्ष

दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई आबादी एवं कृषि जोतों के आकार में कमी भविष्य में हमारी खाद्य सुरक्षा के लिए एक चुनौती है ऐसे में इस आबादी की खाद्य जरूरतों को पूरा करने के लिए खाद्य उत्पादन भी उसी रफ्तार में बढ़ाना होगा। विशेषज्ञों का मानना है कि बढ़ती आबादी की खाद्य जरूरतों को पूरा करने के लिए मत्स्य खेती एक टिकाऊ समाधान मुहैया करा सकती है। मत्स्य उपभोग में विविधता के कारण मछलियों का सम्पूर्ण शरीर मत्स्य उत्पाद एवं प्रति-उत्पाद के रूप में उपयोगी है, जो हमारे लिए स्वरोजगार का एक प्रमुख साधन है।

संदर्भ

1. भारत का आर्थिक सर्वेक्षण 2020-21(वॉल्यूम-2)
2. मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय (www.dof.gov.in)
3. राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (www.nfdb.gov.in)
4. पुस्तिका - प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना
5. पुस्तिका - नीली क्रांति योजना
6. राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (www.nbfgr.res.in)
7. हैंडबुक - फिशरीज एंड एक्वाकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट फंड
8. हैंडबुक ऑफ फिशरीज एंड एक्वाकल्चर
9. एफएओ-सोफिया 2020